ICSSR Sponsored
ISSN: 2319-9997

Journal of Nehru Gram Bharati University, 2025; Vol. 14 (II):373-377

भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में साम्प्रदायिक सद्भाव के स्वर

सुमन वर्मा एवं विष्णु प्रसाद शुक्ल

हिन्दी विभाग, नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय ,प्रयागराज

Received: 28.10. 2025 Revised: 30.11.2025 Accepted:13 .12.2025

सारांश

सम्पूर्ण विश्व के लिए साम्प्रदायिकता सबसे बड़ी चुनौती है। आज सम्पूर्ण संसार जाति , धर्म एवं वर्ण आदि के श्रेष्ठता बोध में झुलस रहा है। किसी भी समाज के लिए साम्प्रदायिकता एक नासूर की भाँति है। जिसके कारण हजारों बेगुनाह असमय ही कालकवलित हो जाते हैं। साहित्य लेखन का उद्देश्य मुख्यतः मानवता, समरसता एवं सामाजिक सद्भावना स्थापित करना है। भगवानदास मोरवाल ने भी इस बात का ध्यान रखते हुए अपने उपन्यासों में साम्प्रदायिक सद्भाव के स्वर को मुखरित किया है।

प्रस्तावना :-

साम्प्रदायिकता मानव विरोधी होती है। संकीर्णता से इसका जन्म होता है। राजनैतिक स्वार्थ ,अशिक्षा और व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने के लिए प्रत्येक समाज में विघटनकारी तत्व मौजूद होते हैं जो धर्म ,जाति एवं वर्ण के नाम पर मनुष्यों के मन में नफरत का जहर घोलने का काम करते है। भगवान दास मोरवाल के उपन्यासों में ऐसे तत्वों के प्रति प्रतिरोध का स्वर दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत शोधपत्र में सम्प्रदायिकता की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में चित्रित साम्प्रदायिक सद्भाव के स्वर को स्पष्ट किया गया हैं।

मानव जाति के लिए आपसी सौहार्द या सद्भाव होना अत्यन्त आवश्यक है। आज सभी सांप्रदायिक ,शब्द के अर्थ से परिचित हैं। संप्रदाय से ही सांप्रदायिक शब्द बना है, यानि मार्ग पंथ , रीति ,गुरूमंत्र अर्थ शब्दकोश में मिलते हैं। सद्भाव 'शुभभाव 'शब्द का अर्थ है -मित्रता , आत्मीयता ,मित्रत्व आदि।

भारतीय समाज में अनेक धर्मों के लोग रहते है। अलग-अलग धर्मों के होने से भारतीय समाज में मिली जुली संस्कृति का विकास होता है। देवेन्द्र चौबे लिखते हैं" -भारतीय समाज 'बहुसामुदायिक 'समाज है ,जिसमें विभिन्न वर्गों ,जातियों-प्रजातियों ,धर्मों व सम्प्रदायों के लोग

रहते है।"[1] संस्कृति ही पूरे समाज की अलग पहचान बनाती है। समाज की सामाजिक व्यवस्था , अज्ञानता ,अर्थव्यवस्था की प्रक्रिया में बाधा होना ,ऐसे उपेक्षित समाज का चित्रण भगवानदास मोरवाल ने अपने उपन्यासों में किया है।

भगवानदास मोरवाल ने अपनी स्मृति कथा **'पकी जेठ की गुलमोहर'** में मेवात में रहने वाले हिन्दू ,मुस्लिम एवं अन्य सम्प्रदाय के लोगों के आपस में मेलजोल ,रहन-सहन एक दूसरे के प्रति सौहार्द का भाव आदि का चित्रण किया है।" हिन्दुओं के बनिया ,बामन ,जैन ,विभाजन के दौरान पाकिस्तान से आए शरणार्थियों के अलावा कुम्हार ,चमार ,भंगी ,खटीक ,भडभूंजा ,डकैत , माली ,तेली ,नाई ,धोबी ,चानौर ,कुंजड़ा ,फकीर ,लुहार ,मीरासी ,खाती जैसी प्रमुख जातियों और उनकी मिली जुली तहजीब का मिशाल है नगीना। इसकी भौगोलिक बनावट बड़ी अजीब है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक यदि हम आधे घंटे में पार कर सकते हैं तो पूरब से पश्चिम पार करने में दो गुना से अधिक समय लगता है। सांप्रदायिक सद्भाव के यहाँ सारे प्रतीक धार्मिक स्थल मौजूद है। जैन मन्दिर ,कुम्हारों का मन्दिर ,चमारों का मन्दिर ,भंगियों का मन्दिर ,माता मन्दिर के अलावा जामा मस्जिद ,ईदगाह ,वीरों की मजार सभी कुछ है मेरे कस्बे में।[2]"

इसी प्रकार मोरवाल के **'काला पहाड़'** उपन्यास में गांव के पंचों ने सलेमी के साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार करते हुए उसे अपने बेटे को बड़ी सजा देने से रोक दिया। इस उपन्यास में यह दिखाया गया है कि सलेमी के पुत्र ने रामचन्दर की पुत्री के साथ दुर्व्यवहार किया जिसके कारण सलेमी का पूरे गांव में नाम खराब हो जाता है। सलेमी कई दिनों तक घर से बाहर नहीं निकलता है। पंचायत द्वारा यह फैसला सुनाया जाता है कि सलेमी भरी पंचायत में सबके सामने अपने बेटे को पाँच जूते मारेगा। यह देखने को सभी की आंखे भरी पंचायत में ठहर सी जाती है। सलेमी ने अपने बेटे पर तड़ातड़ जूते बरसाए। सलेमी की हिम्मत टूट गई बेटे की वजह से सलेमी बहुत अधिक अपमान महसूस कर रहा था। ऐसी स्थिति में सलेमी को उसके मित्र मनीराम और नबी खाँ ने संभालते हुए खड़ा किया और उसे हिम्मत बंधाते हुए घर ले जाने लगे। "हिम्मत सू काम ले ----- जो होगो ,वाहे भूल जा -----। मनीराम ने सलेमी की हिम्मत बँधाई।[3]" पंचायत समाप्त होने के बाद दोनों बड़ी मुस्किल से उसे घर तक लाते है। इस प्रकार उपन्यास में सलेमी के प्रति दोनों की सद्भावना व्यक्त की गई है।

'बाबल तेरे देश में' उपन्यास की पात्र पारो जो कि हिन्दू धर्म की स्त्री है फत्तू के साथ भागकर मेवात आ जाती है तो उसकी सास असगरी उससे प्यार से पूछती है" -पारो बेटी ऐसी कौन सी बात ही जाके पीछे तू ,अपणा मुल्क-ए छोड़ के मेवात में आके मरी है ,ऊ भी एक हिन्दुआणी होके[4]"? पारो ने बताया कि किस प्रकार उसका पिता उसके साथ दुर्व्यवहार करता था और वह उससे बचने के लिए फत्तू के साथ भागकर मेवात आ गई। असगरी पारो को सही ठहराती है। "पारो बेटी चन्द्रा ने ई एकदम सही फैसला लियो कि अपना वा रावण सा बाप के तमाचा

मारके वा फत्तू के पीछे हो ली। वाकी जिगह मै होती तो मैं भी यही करती जो वा चन्दा ने करी ही। बल्कि मैं तो ऐसा ढेड बाप का मगज-ए खिलाके आती ,पीछे जो होती देखी जाती।[5]" असगरी ने पारों को हिम्मत बंधाई ,उसके साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार किया। असगरी पारो को अपने निकट खीचा और उसे बाहों में भरते हुए कहा" -पारो बेटी अब तू भूल जा के तू कदी चन्दा या चन्द्रा थी। अब तू पारो है या असगरी की बहू।[6]" पारो के हिन्दू होने पर भी असगरी उसे अपनाती है और बहू का दर्जा देती है अर्थात् मोरवाल के इस उपन्यास में भी साम्प्रदायिक सद्भाव को दर्शाया गया है।

'रेत' उपन्यास में कंजर समुदाय की स्त्रियों के उद्धार के लिए सावित्री एक 'जनजाति महिला उद्धार सभा 'का निर्माण करती है। वह चाहती है कि सभी देह व्यपार को छोड़कर इस नरक से निकलें और इज्जत की जिंदगी जिए। इसके लिए सावित्री कमला सदन की बुआ रूक्मिणी को मुरली भाई से मिलवाती है। उनके सद्भाव व विचारों से वह रूक्मिणी को परिचित करवाती है। "सावित्री बहन अपने भाई साहब के सदविचारों और उसकी इस भावना से भी तभी परिचित हो गई ,जब पहली बार मौका पाते ही नितांत अकेले में उससे राजनीति का पहला सबक पढ़ा था। अपनी रजामंदी और पूरे होशो हवाश में उसने भी शिष्या-दक्षिणा के रूप में गुरू-दक्षिणा में अपने आपको पूर्णतः राष्ट्र के प्रति समर्पित कर दिया था।[7]"

'वंचना' उपन्यास में स्त्री पात्र 'नसीम 'के ससुराल वाले उसे जलाकर मार डालते हैं। नसीम के माता-पिता अपनी बेटी को इंसाफ दिलाने के लिए सेशन कोर्ट जाते हैं ,जहाँ पर आरोपियों को मौत की सजा सुनाई जाती है लेकिन छः महीने बाद ही हाईकोर्ट यह फैसला पलटते हुए नसीम के पति और सास-ससुर के रिहाई का आदेश पारित कर देती है। यह खबर जब नसीम की मां रूखसती बी सुनती है तो उसके पैरों तले जमीन खिसक जाती है। रूखसत बी और रहमत अली बाद में भी नसीम के हत्यारों को सजा दिलाने का प्रयास करते हैं किन्तु उनके हाँथ निराशा ही लगती है। रूखसत बी की पद्मा ठकुराइन के यहाँ आना जाना था इस कारण से वकील ब्रजनन्दन ठाकुर को यह बात पता चलती है। तब वह रूखसत बी और रहमत से जाकर मिलता है। रूखसत बी अदालती-आदेश लाकर ब्रजनन्दन ठाकुर को देती है तभी हिचकिचाते रहमत अली ठाकुर साह से ठंडा-गरम लेने के लिए पूछते है" -मैंने तो ऐसे ही पूंछ लिया। वैसे भी आप ठाकुर लोग हम मुसलमानों का -----कहाँ खाते है ,यही नर।" बाकी का वाक्य ब्रजनन्दन ठाकुर में हँसते हुए पूरा कर दिया" ,ठीक है ,इस बार आपको मायूस नही होने दूँगा।[8]" आदेश पूरा पढ़ने के बाद ठाकुर साहब ने बताया कि हमें इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील करनी चाहिए।

वकील साहब यह बात भली भाँति जानते थे कि सुप्रीम कोर्ट का खर्चा इनके बस की वात नही ,इसलिए उन्होंने उसके लिए 'इंडियन फेडरेशन ऑफ वीमैन लायर्स 'और कुछ एन .जी . ओ .से बात की। "हमारी माली हालत पर जरूर रहम करना।" बेबस रहमत के दोनों हाथ आपस में जोड़ते चले गए। "आप बेफिक्र रहें। आपका इसमें एक टका भी खर्चा नहीं होगा। मैं इस आर्डर

को साथ ले जाता हूँ।[9]" इस प्रकार उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में अपील दर्ज करवाई और सुप्रीम कोर्ट ने आरोपियों को उम्र कैद की सजा सुना दी। यह खबर पद्मा ने रूखसत बी को सुनाई ,तो रूखसत बी की आँखों में ठहरा हुआ पानी आँसुओं के रूप में बह निकला।

इस प्रकार उपन्यास में रूखसत बी और रहमत अली के साथ वकील सद्भावपूर्ण व्यवहार करते है। वकील साहब ने दोनों का पूरा सहयोग दिया ,बिना किसी स्वार्थ भाव से रूकसत और रहमत अली को इंसाफ दिलवाया यहाँ हिन्दू-मुस्लिम दोनों के आपसी प्रेम और सहयोग के भाव को दर्शाया गया है।

'खानजादा' उपन्यास में बाबर कई इलाकों में कब्जा कर चुका था। जब उसे आगरा से बयाना की तरफ कूच करने का कोई रास्ता नही बचा तब उसने हसन खाँ मेवाती को अपने साथ मिलाने के लिए दोस्ती का पैगाम भेजवाया। वह हसन खाँ मेवाती को अपने साथ शामिल करके उसके ईमान और वतनपरस्ती को खरीदना चाहता था किन्तु हसन खाँ मेवाती ने बाहर से आए एक आततामी के साथ नही दिया। उसने कहा "मेरे पुरखों ने इस मुल्क की मिट्टी को अपने खून से सींचा है। यहाँ के जर्रे-जर्रे में मेरी सांस बसी हुई है। यह हसन खाँ मेवाती जो आज आप के समक्ष खड़ा है ,वह यहाँ की धूल माटी का कलेवा करके बड़ा हुआ है। जो एहसान उसकी मिट्टी का उसके ऊपर है ,उसे मैं मिट्टी में मिला दूंगा ,कैसे सोंच लिया। मेरी तरफ से से बाबर को यह पैगाम भिजवा दो कि हिन्दुस्तान में हिन्दू-मुसलमान में कोई फर्क नहीं है। यहाँ सब भाई-भाई हैं।[10]" हसन खाँ मेवाती शेख जमाली द्वारा लाया गया पैगाम स्वीकार नही कहता और सभी धर्मों में समानता बताते हुए उनमें आपसी प्रेम ,सद्भाव की भावना को व्यक्त करता है। इस प्रकार इस उपन्यास में भी हिन्दू-मुस्लिम के भाइचारे को दर्शाया गया है।

समाज अनेक व्यक्तियों और विविध वर्गों का समूह होता है। मनुष्य समाज में रहकर अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करता है। यहाँ प्रत्येक नागरिक को अपने अनुसार जीवन जीने की स्वतंत्रता है। भगवानदास मोरवाल ने अपने उपन्यासों में मेवात के मुस्लिम समाज के विविध आयामों का बखान किया है तथा यह वताया है कि हिन्दू-मुस्लिम समाज में आन्तरिक मन-मुटाव होने के बावजूद उनमें एक जुटवा पाई जाती है। प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की समस्या का समाधान करने के लिए तत्पर रहता है। समाज के लोगों का आपसी संबंध इस प्रकार है कि यदि एक परिवार में कोई समस्या आ जाती है तो उसके समाधान के लिए पूरा गांव तैयार रहता है। "देख भाई काका ,कौसल्या और रामरती तिहारी ही बेटी ना है ,या मुहल्ला और या गाँवों-बस्ती की भी बेटी हैं। अब तैनेई बात बता दी है तो चाहे लाहूस बिछ जाएँ ,जग्गी आँख तो उठाके देख जाए।[11]"

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त तथ्यों की विवेचना के पश्चात समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि भगवान दास मोरवाल के उपन्यासों में साम्प्रदायिकता के प्रतिरोध का स्वर स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ता है।

मोरवाल के अनुसार हिन्दू एवं मुसलमानों में सामाजिक संबन्ध स्थापित हैं। समाज में चाहे कोई सलेमी नाम का हो या असलम हो या बनवारी हो सभी लोगों की दिनचर्या अजान से शुरू होकर अजान से समाप्त होने के साथ ही चलती है। दोनों धर्मों के लोग सदियों के साथ रहते आ रहे हैं। ये सभी आपस में प्रेम भाव के साथ समाज में रहते है। इतिहास गवाह है कि साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सदैव मानव मूल्य स्थापित करने और साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने का कार्य किया है। भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों का मूल्यांकन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि भगवानदास मोरवाल ने अपने उपन्यासों में साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित करने का भरसक प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. देवेन्द्र चौबे, समकालीन कहानी का समाजशास्त्र ,प्रकाशन संस्थान ,दिल्ली ,सं ,2024 . पृ.सं11.
2. भगवानदास मोरवाल, पकी जेठ का गुलमोहर ,वाणी प्रकाशन ,दिल्ली ,सं ,2016.पृ.सं14.
3. भगवानदास मोरवाल ,काला पहाड़ ,राधा कृष्ण प्रकाशन ,दिल्ली ,संस्करण ,2017 पृ.सं242.
4. भगवानदास मोरवाल ,बाबुल तेरा देश में ,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण ,2004 पृ.सं147.
5. भगवानदास मोरवाल ,रेत ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,सं ,2016 .पृ.सं226 .
6. भगवानदास मोरवाल, वंचना ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,सं ,2020 .पृ.सं175 .
7. भगवानदास मोरवाल ,खानजादा ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,सं ,2021 .पृ.सं175-174.
8. भगवानदास मोरवाल ,बाबल तेरा देस में ,राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली ,सं ,2004 .पृ.सं . 175

Disclaimer/Publisher's Note:

The statements, opinions and data contained in all publications are solely those of the individual author(s) and contributor(s) and not of JNGBU and/or the editor(s). JNGBU and/or the editor(s) disclaim responsibility for any injury to people or property resulting from any ideas, methods, instructions or products referred to in the content.